International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 05-02-2022, Accepted: 20-02-2022, Published: 07-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 16-18

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

मुकेश कुमार गुप्ता
असि0 प्रो0, गिन्नी देवी मोदी इन्स्ट्रीटयूट ऑफ ऐजूकेशन, मोदीनगर गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कई युग बदलते गयें। वर्तमान को कलयुग की संज्ञा दी गयी । जिसमें मनुष्यों की संख्या में वृद्वि ने सुरसा जैसा मुह बढा लिया। चाहते हुए भी हम छोटा परिवार एंव सुखी परिवार नहीं रख पा रहे हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में स्थान स्थान पर दस पुत्रों के लिए प्रार्थनाएं की गई हैं साथ ही बडे परिवारों की दुर्दश का भी वर्णन प्रचुरता से मिलता हैं। ऋग्वेद मानव जाति में सबसे प्राचीन वेद हैं। इसमें कहा गया है कि "बहुप्रजा निॠतिवेंश" अर्थात अधिक प्रजा वाला राज्य धोर संकट पाता है। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में यह व्यष्टि एंव समष्टि दोनों स्तरों पर प्रयुक्त होता हुआ प्रतीत होता है। इस वेद वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक ग्रन्थों में की गई दस पुत्रों के लिए प्रार्थनाएँ उस समय के आर्थिक,सामाजिक एंव राजनैतिक, दृष्टिकोण से भले ही उपयुक्ता रही हों, परन्तु समय के राज्य के साथ साथ छोटे परिवार के परिवार के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण होने लगा।

मुन महाराज का भी कथन है कि "अकेले पहले पुत्र से ही व्यक्ति पुत्रवान हो जाते हैं पितृ– ऋण से युक्त हो जाते है एंव परमानन्द की प्राप्ति करता है। पहला पुत्र ही धर्म से उत्पन्न पुत्र है शेष तो लिप्सा से उत्पन्न है"। भारत में वेद, महाभारत, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मनुर्स्मति आदि ऐसे ग्रन्थ हैं जिसमें लधु परिवार सम्बन्धों ज्ञान का वर्णन मिलता है। प्लेटों के रिपब्लिक में मत व्यक्त किया गया है कि यदि जनसंख्या सीमित नहीं व परिवार लधु नहीं है तो निर्धानता बढेगी।

अंतराष्ट्रीय स्तर पर इसका सबसें ज्वलंत उदाहरण भारत की जनसंख्या नीति है, जहॉ पर 'हम दो हमारे एक' के सिद्वान्त को अपनाकर अति लधु परिवार की तरफ जाने का सकेत दिया है। उसी तरह भारत में जनसंख्या पर नियंत्रण व छोटे परिवारों को बढावा देने हेतु प्रोत्साहन के साथ साथ कठोर नीतियां भी अपनाई जा रही है साथ ही सरकार द्वारा लधु परिवार रखने वाले व्यक्तियों को विभिन्न प्रोत्साहन राशियों भी दी जाती है। हम कह सकते है कि हमें बडे परिवार की समस्याओं से निजात पाने के लिए प्रोत्सीान व कठोरता के साथ–साथ इन प्रकरणें को हमारी शिक्षा में भी पाठ्यक्रम का एक अहम् हिस्सा बनाना चाहिए।

मूल शब्दः ग्रामीण विद्यार्थियों, शहरी विद्यार्थियों, लधु परिवार, अभिवृत्ति

प्रस्तावना

मनुष्य की उत्पत्ति के विषय में अनेक विचाराधाराएं प्रचलित हैं ब्रहा को सृष्टिदायक एंव उत्पत्ति का प्रथम सूत्र माना गया हैं। मनु और सतरूपा के द्वारा इसका श्रीगणेश किया गया है।कई युग बदलते गयें। वर्तमान को कलयुग की संज्ञा दी गयी । जिसमें मनुष्यों की संख्या में वृद्वि ने सुरसा जैसा मुह बढा लिया। चाहते हुए भी हम छोटा परिवार एंव सुखी परिवार नहीं रख पा रहे हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में स्थान स्थान पर दस पुत्रों के लिए प्रार्थनाएं की गई हैं साथ ही बडे परिवारों की दुर्दश का भी वर्णन प्रचुरता से मिलता हैं। ऋग्वेद मानव जाति में सबसे प्राचीन वेद हैं। इसमें कहा गया है कि "बहुप्रजा निॠतिवेंश" अर्थात अधिक प्रजा वाला राज्य धोर संकट पाता है। प्रजा शब्द परिवार एवं राज्यों की जनसंख्या दोनों के लिए भले ही प्रयुक्त न हुआ हो लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में यह व्यष्टि एंव समष्टि दोनों स्तरों पर प्रयुक्त होता हुआ प्रतीत होता है। इस वेद वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक ग्रन्थों में की गई दस पुत्रों के लिए प्रार्थनाएँ उस समय के आर्थिक,सामाजिक एंव राजनैतिक,दृष्टिकोण से भले ही उपयुक्ता रही हों , परन्तु समय के राज्य के साथ साथ छोटे परिवार के परिवार के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण होने लगा।

प्राचीन साहित्य के अध्ययन से विदित होता है कि उस समय के लोग बडें परिवारों के कारण जीवन में प्राप्त होने वाले दुष्प्रभावों एंव हानियों से परिचित थे। कर्मपुराण के प्रथम प्रकरण में कहा है कि पति–पत्नी के सहवास की अनिवार्यता केवल एक पुत्र उत्पन्न करने तक ही सीमित है। मुन महाराज का भी कथन है कि "अकेले पहले पुत्र से ही व्यक्ति पुत्रवान हो जाते हैं पितृ– ऋण से युक्त हो जाते है एंव परमानन्द की प्राप्ति करता है। पहला पुत्र ही धर्म से उत्पन्न पुत्र है शेष तो लिप्सा से उत्पन्न है"। भारत में वेद, महाभारत, कौटिल्य का अर्थशास्त्र , मनुर्स्मति आदि ऐसे ग्रन्थ हैं जिसमें लधु परिवार सम्बन्धों ज्ञान का वर्णन मिलता है। प्लेटों के रिपब्लिक में मत व्यक्त किया गया है कि यदि जनसंख्या सीमित नहीं व परिवार लधु नहीं है तो निर्धानता बढेगी।

इस निर्धारता को दूर करने विश्वभर में प्रयास हो रहे हैं। अंतराष्ट्रीय स्तर पर इसका सबसें ज्वलंत उदाहरण भारत की जनसंख्या नीति है, जहॉ पर' हम दो हमारे एक' के सिद्वान्त को अपनाकर अति लधु परिवार की तरफ जाने का सकेत दिया है। उसी तरह भारत में जनसंख्या पर नियंत्रण व छोटे परिवारों को बढावा देने हेतु प्रोत्साहन के साथ साथ कठोर नीतियां भी अपनाई जा रही है साथ ही सरकार द्वारा लधु परिवार रखने वाले व्यक्तियों को विभिन्न प्रोत्साहन राशियों भी

दी जाती है। हम कह सकते है कि हमें बडे परिवार की समस्याओं से निजात पाने के लिए प्रोत्सीन व कठोरता के साथ–साथ इन प्रकरणें को हमारी शिक्षा में भी पाठ्यक्रम का एक अहम् हिस्सा बनाना चाहिए।

अध्ययन का महत्व

परिवार के आकार तथा इसके स्वास्थ्य और जीवन पर प्रभाव के संबंध में अनेक शोध कियें गये है। जनसंख्या वृद्वि राष्ट्र के जीवन स्तर को प्रभावित करके उसे निम्न स्तरीय बनाती है। इसी प्रकार यदि परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक हो तो स्वाभाविक ही है कि परिवार के साधनों का बंटवारा अधिक सदस्यों में होगा तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य को साधनों का कम भाग ही मिल पायेगा। परिवार में यदि प्रजनन दर अधिक है तब मॉ एंव उसके बच्चों पर इसका विपरीत प्रभाव पडेगा ही, साथ ही सम्पूर्ण राष्ट्र को यह विपरीत रूप से प्रभावित करेगी। इस प्रभाव को रोकने के लिए लधु परिवार पर अध्ययन की आवश्यकता है।

अध्ययन का कथन

ग्रामीण एंव शहरी विद्यार्थियों की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य

1. ग्रामीण एंव शहरी छात्रों की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।
2. ग्रामीण एंव शहरी छात्राओं की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

परिकल्पनाऍ

1. ग्रामीण एंव शहरी छात्रों की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. ग्रामीण एंव शहरी छात्राओं की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमाकनं

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने जिला गाजियाबाद के अर्न्तगत ही सम्पादित किया है।

न्यादर्ष में विद्यालयों का चयन

प्रस्तुत लघु शोध कार्य में आंकड़ों के चयन हेतु गाजियाबाद जनपद में स्थित विभिन्न ग्रामीण एंव शहरी छात्रों को चयनित किया है ।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुता अध्ययन में माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एंव शहरी छात्रों की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति को मापने के लिए ”लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति मापनी” का प्रयोग किया जो कि डॉ टी,एस,सोढी व डॉ जी,डी, शर्मा द्वारा निर्मित हैं ।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

a. मध्यमान
b. प्रमाप विचलन
c. टी–परीक्षण या क्रान्तिक अनुपात

आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण, व्याख्या एवं उनका विष्लेषण

ग्रामीण एंव शहरी छात्रों की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।

सारणी संख्या 1

तुल्य समूह	N	Mean	S. D	C. R	सार्थकता स्तर
ग्रामीण छात्र	100	5.32	1.92	17.75	.01 Sig.
शहरी छात्र	100	9.58	1.42		

विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका 10.1 में ग्रामीण एंव शहरी छात्रो को प्रदर्शित किया गया है। उक्त तालिक को देखने से स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र के 100 एंव शहरी छात्र के 100 छात्रों के मध्यमान क्रमशः 5.32 एवं 9.58 हैं मानक विचलन क्रमशः 1.92 तथा 1.42 हैं। इन दोनो के मध्य समस्या की सार्थकता ज्ञात करने के लिसे निकाले गये क्रान्तिक अनुपात का मान 17.75 मान प्राप्त हुआ । जो क्रान्तिक अनुपात मूल्य तालिक में 198 df पर 0.01 तथा 0.05 स्तर पर मान 2.59 तथा 1.97 है और गणना द्वारा प्राप्त मान इससे कम है। ।

अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है जो कि ग्रामीण एंव शहरी छात्रों की प्रति लधु परिवार के प्रति असमान अभिवृत्ति को प्रकट करती है । जिसकी पुष्टि आंकडों के मध्यमान तथा मानक विचलन में भी होती है।।

सारणी संख्या 2

तुल्य समूह	N	Mean	S. D	C.R	सार्थकता स्तर
ग्रामीण छात्राऐं	100	5.43	1.75	16.24	.01 Sig.
शहरी छात्राऐं	100	9.49	1.84		

विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका 10.1 में ग्रामीण एंव शहरी छात्रो को प्रदर्शित किया गया है। उक्त तालिक को देखने से स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र के 100 एंव शहरी छात्र के 100 छात्रों के मध्यमान क्रमषः % 5.43 एवं 9.49 हैं मानक विचलन क्रमषः 1.75 तथा 1.84 हैं। इन दोनो के मध्य समस्या की सार्थकता ज्ञात करने के लिसे निकाले गये क्रान्तिक अनुपात का मान 16.24 मान प्राप्त हुआ । जो क्रान्तिक अनुपात मूल्य तालिक में 198 कि पर 0.01 तथा 0.05 स्तर पर मान 2.59 तथा 1.97 से अधिक है।

अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की प्रति लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति असमान है । जिसकी पुष्टि आंकडों के मध्यमान तथा मानक विचलन में भी होती है। ग्रामीण छात्राओं की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन शहरी छात्राओं की लणु परिवार के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान से कम है ।

निष्कर्ष

परिकल्पना संख्या–1

परिकल्पना संख्या–1 के सत्यापन हेतु एकत्रित आंकडों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है जो की ग्रामीण एंव शहरी परिवेश में लधु परिवार के प्रति भेद को दर्शाता है। प्राप्त आंकडों मध्यमान मानक एंव क्रान्तिक अनुपात से भी यही ज्ञात होता है कि उनकी अभिवृत्ति असमान है। अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि शहरी छात्राऐं ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा लधु परिवार के प्रति अधिक गम्भीर है। इस कारण शहरी इलाकों में परिवार नियोजन के कार्यक्रमो का अधिक होना तथा मीडिया का प्रभाव है जबकि ग्रामीण परिवेश में उचित शिक्षा का अभाव एंव अंधविश्वासों का प्रभाव अभी तक व्याप्त हैं

परिकल्पना संख्या–2

परिकल्पना संख्या–2 के सत्यापन हेतु एकत्रित आंकडों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है शहरी छात्राएं ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा लधु परिवार के प्रति अधिक सचेत हैं। इसकस प्रमुख कारण ग्रामीण परिवेश में उचित शिक्षा का अभाव है तथा गॉवों में परिवार नियोजन से सम्बन्धित कार्यक्रमों का न होना है।

सुझाव

भावी शोध हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में गाजियाबाद जिला के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की लधु परिवार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । यदि यह अध्ययन पूरे सम्भाग स्तर पर किया जाये तो इसकी सार्थकता आधिक बढ जाती है।
2. गाजियाबाद संभाग के अलावा किसी अन्य सम्भाग को लेकर भी भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता है ।
3. भविष्य में राज्य स्तर पर भी शोध कार्य किया जा सकता है ।
4. न्यादर्ष के रूप में 400 ग्रामीण एंव शहरी छात्रों से अधिक को भी लिया जा सकता है ।
5. लधु परिवार के अलावा अन्य चरों को लेकर भी शोध कार्य किया जा सकता है ।
6. भविष्य में न्यादर्ष के रूप में लिये गये ग्रामीण छात्रो व शहरी छात्रों के अलावा सरकारी एंव गैर सरकारी छात्रों को लेकर भी शोध कार्य किया जा सकता है ।
7. लधु परिवार के एक साथ सम्पूर्ण अध्ययन के अलावा इसके सभी अलग–अलग क्षेत्रों को लेकर भी भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता है ।

सन्दर्थ सूची

1. अस्थानाय डॉ विपिन, (1994) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एंव मूल्याकन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. एलिजाबेथ बी, हर्लोक, (1967) विकास मनोविज्ञान, वैज्ञाानिक एंव तकनीकी शब्दावली, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय संस्करण ।
3. कपिल एच. के. (1997) सख्यिकी के मूल तत्व , विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा नवीनतम संस्करण।
4. राय पारसनाथ (1998) अनुसधांन परिचय हिन्दी ग्रन्थ अकादमी राजस्थान
5. शर्मा आर. ए. (1999) शिक्षा अनुसधांन लायल बुक डिपो मेरठ
6. चौबे सरयू प्रसाद उच्च शिक्षा मनोविज्ञान रामपारायण लाल प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता इलाहाबाद द्वितीय संस्करण ।
7. परिवार –नियोजन और अध्यापक, पैन, फरवरी 1977